श्री हनुमत् विनय पच्चीसी

विश्वात्मा बावरा

दो शब्द

पूज्य आचार्य श्री का 4 जनवरी 1991 में दिल्ली, एस्कोर्ट अस्पताल में हृदय का बाई पास ऑप्रेशन हुआ। उसके पश्चात् धीरे–2 स्वास्थ्य ठीक होने लगा था, किन्तु अचानक 7 मार्च को दिल्ली में ही वे पुनः अस्वस्थ हो गए और उन्हे एस्कोर्ट अस्पताल में एमर्जैन्सी में रखा गया। डॉक्टरी परीक्षण के पश्चात् यह ज्ञात हुआ कि हृदय में लगाई गई चार नाड़ियों में से अचानक एक नाड़ी बन्द हो गई थी, यह कैसे हुआ, इस विषय में डॉक्टर भी न समझ न सके, सभी डाक्टर हैरान व परेशान थे, किसी को भी समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों हुआ। उसी समय आचार्यश्री ने अपने परमाश्रय भगवान् मारुति की प्रार्थना में एस्कोर्ट अस्पताल में ही 13 मार्च को इस श्रीहनुमत् विनय पंच्चीसी की रचना प्रारम्भ की और वहां रहते हुए इसे लिख कर अपने आराध्य देव के पावन चरणों में समर्पित किया।

आपकी प्रार्थना स्वीकार की प्रभु मारुति ने तथा बिना किसी प्रकार की चिकित्सा के आप आश्चर्यजनक रूप से स्वस्थ हो गए। यह श्रीहनुमत् विनय पच्चीसी संकट मोचन भगवान् मारुति के ही चरणों में संकट निवारणार्थ भक्त–हृदय की पुकार है। इस प्रकार से द्रवित हो प्रभु आञ्जनेय निःसन्देह अपने भक्त की पीड़ा को सदा के लिए दूर कर देते हैं, आवश्यकता होती है भक्ति भाव से उनका आश्रय ग्रहण कर उन्हें पुकारने की। अपनी विनय पच्चीसी के अन्त में आचार्यश्री ने प्रतिज्ञा के साथ यही बात कही है। श्रीहनुमत विनय पच्चीसी का यह दूसरा संस्करण प्रकाशित होने जा रहा है, विश्वास है आर्त सज्जन वृंद आस्थायुक्त हो इसके पाठ से लाभान्वित होंगे।

ब्रह्मऋता परिव्राजिका
प्रचारिका
इन्टरनैशनल ब्रह्मर्षि मिशन

6/2/04

ॐ श्री गणेशाय नमः

ॐ हं हनुमते नमः

ध्यान

कृपा सिन्धु सुखधाम राम भक्तन रखवारे,

महावीर रणधीर देव रघुवीर दुलारे।

तेरो परम प्रताप नाथ त्रिभुवन में व्यापै,

नाम सुनत तब यातुधान सेना सब कांपै।

सुकवि बखानै सुयश प्रभु संकट मोचन दु:ख हरण।

व्याकुल विलपत बावरा आइ पर्‌यो तेरी शरण।।

हे करुणा के धाम राम सिय प्राण पियारे,

देखहु पलक उठाइ दीन तव द्वार पुकारे।

हौं जन्मनि को दास आस तव एक गोसांई,

करम काल ग्रह क्रूर मोहि पीड़त बरिआंई।

शरणागत वत्सल प्रभो विनय करउँ सिर नाइ के।

शरण पर्‌यो तव बावरा वेगि संभारो आइ के।।

श्री हनुमत् विनय पच्चीसी

बालपने सूधो नाथ आस्था हिय में लिए,

शरण तिहारी आयो जानत सुजान हैं।

करुणानिधान की हौं करुणाप्रसाद पाइ,

भूलि गयो भाग्य को प्रताप जो प्रधान है।

दियो जग मान बहु किंकर तिहारो जानि,

तेरी प्रभुताई पै अपार मुझे मान है।

बावरा सनाथ है अनाथ ज्यों बिहाल पर्‌यो,

तऊ न पसीज्यो नाथ कैसे दयावान हैं ।।1 ।।

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

बार बहु आरत पुकारि कह्यो दीनबन्धु,

दीनता दिखायो दुःख आपनो सुनाइ के।

जनम अनेकन जो करम कषाय लाग्यो,

सोई सुख वासना में राख्यो भरमाइ के।

करुणानिधान सद्‌गुरु को प्रसाद पाइ,

लह्यो राम नाम रति मति थिरताइ के।

हाथ कपिनाथ गह्यो बावरा सुजान भयो,

घाटि काह कियो नाथ रावरो कहाइ के ।।2 ।।

राम राम

हौं तो अल्पज्ञ जीव शिव को आभास मात्र,

बोध औ अबोध जाको सहज धरम है।

अहं मम भाव लिए हरष विषाद हिये,

चाहि अनचाहे तऊ भोगत करम है।

प्रभु की शरण आइ बारेक पुकारै पाहि,

निगम बतावे गति पावत परम है।

बावरा विचारो अति दीन ह्वै दुआरे पर्‌यो,

दास को निहारो नेक नाम की शरम है।।3 ।।

मेरी गति देखि नाथ लोग पूछते हैं सदा,

साँचो कोऊ करुणानिधान भगवान है।

जिसकी आराधना में जीवन व्यतीत कियो,

सो तो कवि कल्पना को मात्र अनुमान है।

ऐसो उपहास सुनि हिय को आघात होत,

कहुँ किमि देव तेरी करुणा महान है।

उर को विदारि तन फारि जार जार कियो,

दया नहीं आइ आप कैसे दयावान हैं।।4।।

फार्‌यो हिय रोग को निवारिबे को हेतु जानि,
करम विपाक भोग मानि ताहिं सहि गयो।
ऐतेहुँ पै उर को कलंक नाहिं दूरि भयो,
भिषग बतायो तो अवाक् सुनि रहि गयो।
रावरो प्रातप को सहारो जो हमारो सदा,
आस विश्वास सभी वेदना में बहि गयो।
बावरा सनाथ सहै यातना अनाथ जिमि,
याहि अति दाह नाथ अन्तर को दहि गयो।।5।।

मान्यो नरलोक मांहि कर्म ही प्रधान बन्यो,
सुख दुःख भोग रोग ताको परिणाम है।
देव की उपासना आराधना औ साधना को,
नाथ इस जीवन में कहो कहाँ ठाम है।
संत कहैं पाप को पहारि कोटि जन्मनि कै,
होत जरि छार लेत एक राम नाम है।
करुणानिधान हनुमान आप जानत हो,
सांचो मानि बावरा बिकान्यो बिनु दाम है।।6।।

आगम कहत कर्म त्रिविध स्वरूप मांहि,

संचित प्रारब्ध क्रियमाण कह्यो जात है।

परम प्रकाश में परावर को बोध पाइ,

निगम बतावै सब संचित सिरात है।

पावन विशुद्ध चित्त वासना विहीन होत,

ज्ञान के प्रकाश क्रियमाण जरि जात है।

प्रबल प्रारब्ध हेतु जाति भोग जीवन को,

बावरे शरीर संग भोगि के नसात है।।7।।

कर्म है अटल सत्य नाथ नर जीवन में,
ताको फल भोग यदि जीव की नियति है।
काह भयो नाम को प्रताप पाप नाशक जो,
संत जन गावैं जासु महिमा महति है।
पावन अपावन वा चेतन अचेत पर्‌यो,
श्वास प्रति श्वास जाकि राम नाम गति है।
बावरा बराक सो पुकारि कहै दीनबन्धु,
नाम हूँ न जार्‌यो पाप दूजो कौन पति है।।8।।

बिलग न मानै नाथ स्वारथी दुखित जानि,

आरत अनारी सदा आपनी कहत हौं।

नाम को प्रभाव काह कोऊ कलि कीलि दियो,

सुमिरौं सुचित तऊ सांसति सहत हौं।

सुख की न चाह परवाह दुख की न मोहि,

नाथ उपहास सुनि अन्तर दहत हौं।

बावरा विचारो जन्मनि सो तिहारो दास,

और कहाँ जाइ काको पायन गहत हौं।।9।।

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

कलि को प्रताप राम राम को प्रभाव हर्यो,

ऐसो कछु नाथ मोहि समुझि परत है।

महिमा महान जाकि निगम बखान करें,

ताको उपहास सुनि अन्तर जरत है।

आपही सहायक हैं राम गुण गायक को,

प्रभु बल पाइ दास भव से तरत है।

बावरे की बेर देर कहाँ कियो कपिनाथ,

रावरे दुआरे पर्यो रिरिहा ररत है।।10।।

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

और कहाँ जाइ नाथ आपने हिय की कहौं,

कौन सुनि द्रवत है पुकार दीन जन की,

करम बचन हिये शरण तिहारी लिये,

भावत न देव दूजो कामना न कन की।

बार बार विनय सुनायो अति आतुर ह्वै,

मानि अधिकार कह्यो पीड़ा निज मन की।

देखि के ढिठाई बाप बिलग न मानैं आप,

बावरा तिहारो दास आस चितघन की ।।1 1 ।।

पंच महाभूत तानि तन को वितान रच्यो,

विषम स्वभाव जाको सहज धरम है।

याहि बीच आई जीव कालको प्रभाव पाइ,

जनम अनेक किये भोगत करम है।

आगम बतायो सदा संत समुझाइ कह्यो,

माया को खेल यह सांचो न भरम है।

मूढ़मति बावरे को मोह से विमुक्त करि,

नाथ पद रति देहु चाहना चरम है।।12।।

करमनि को भोग जीव जग को संयोग कियो,
काल को प्रभाव ताकी नियति रचति है।
क्रियमाण संचित प्रारब्ध को स्वरूप धारि,
करम विपाक त्रय ताप में पचति है।
नाथ भवचक्र मांहि जनमि अनेक बार,
यातना अनन्त सहि नाच यों नचति है।
बावरे बराक जीव शिव को चिदंश भूत,
कहो कृपासिंधु ताकि गति यों जंचति है।।13।।

जानत हौं नाथ तव प्रभुता महान अति,

हौं तो लघु जीव कैसे शिव से झगरिहौं।

अन्तर व्यथा की कथा स्वामी को सुनाइबे से,

होत अति तोष ना तो आह उर भरिहौं।

निदरि निहारि दयासिंधु दृष्टि फेरिहैं जो,

ह्वै के अनाथ बिनु मौत नाथ मरिहौं।

बावरा उदास प्रभु करुणा की आस लिये,

प्यास न बुझी तो कपिनाथ काह करिहौं।।14।।

तन अनुरागी मन मोह से विकल होइ के,

ढीठता दिखायो नाथ चरननि में आइ के।

स्वामी हैं सुजान जन अन्तर की जानत हैं,

कहत पुकारि तऊ दीनता सुनाइ के।

देव दयासिंधु से दया की एक बूँद पाइ,

ताप मिटि जइहैं आगि उर की बुझाइ के।

बावरा अनाथ जिमि यातना सहत देखु,

तोसों समरथ सों सुनाथ नाथ पाइ के।।15।।

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

चाह इस तन की है राम गुण गान हेतु,

नाथ मन भावै तो सभाल याकी कीजिये।

करम विपाक पुण्य पाप को प्रताप ताप,

लोक संताप से विमुक्त करि दीजिये।

खोटो खरो रावरो दुआरे पर्‌यो दीनबन्धु,

दयादृष्टि फेरि के त्रिताप हरि लीजिये।

बावरा विनीत याहि याचना करत देव,

लालसा हिये की राम नाम रति दीजिये।।16।।

राम राम

रोग से ग्रसित तन ताप से तपित मन,

दीन दुःखी जीवन महान अभिशाप है।

अबुध अधीन सों दरिद्र पराधीन होत,

आगम बतावै घोर पाप को प्रताप है।

प्रभु की शरण गहै करम कषाय दहै,

संतन की सीख सार राम नाम जाप है।

प्राणधन नाम भयो तऊ न कषाय गयो,

बावरे हिये में नाथ महा परिताप है।।17।।

व्याधियुक्त जीवन से मृत्यु को वरन वर,

प्रभु को प्रसाद मानि शीश ताहिं धरिहैं।

स्वामी से कहे ते बहु सेवक वाचाल होत

मौन गहि अन्तर में आह नित भरिहैं।

तन के सहित मन रावरे अधीन देव,

सहै अति पीर तऊ कहौ काह करिहैं।

बावरे के माई बाप आपु मुख फेरिहैं जो,

दूसरे दुआरे नाथ जाइ कहाँ परिहैं।।18।।

संकट हरण के चरण की शरण आइ,

संकट निवारिबे की याचना करत हौं।

देव बन्दीछोर की विमल विरुदावली को,

गाइ के सुनाइ जन मोद से भरत हौं।

आज नहीं कालि तो सुनेंगे करुणानिधान,

याहि समुझाइ हिये ढाढस धरत हौं।

क्षमा के निधान क्षमादान देहु बावरे को,

बार बार नाथ तव पायन परत हौं।।19।।

रावरो प्रताप नाथ जन्मनि से जानत हौं,

जन्तु को जनेश्वर बनाई देत क्षण में।

मेलि मुखमांहि मार्तण्ड को मिटायो मान,

मेरु सम रावण मिलाई दिये कन में।

अति गतिमान बैनतेय को गुमान हर्यो,

प्रभुता तुम्हारी पूरी रही देवगन में।

बावरे अबोध को प्रबोधता प्रदान करि,

लाई बैठाई दियो मान निज जन में।।20।।

बन्दन करत आञ्जनेय के चरण रज,

तिलक लगाय ताप तन को हरत है।

आँजत तनिक ताहिं आँखिन में अंजन सों,

बोध दे निरंजन को पूरण करत है।

पाये ते प्रसाद चित्त पावन बनाइ देत,

छूअत हिये में राम रस को भरत है।

प्रभु पद पंकज की धूलि निज शीश धारि,

बावरा अनन्त बार नमन करत है।।21।।

प्रभु के पदज नख चंद्र चित्त धारै नित्त,

भूरि ताप दूरि होत आनन्द लहत है।

सुमिरे सकृत उर शीतल करत सदा,

मोह तम तोम हरै आगम कहते है।

पूरित पीयूष से है पावन प्रकाश तांको,

ध्यावत सकल दुःख दारिद दहत है।

बावरे के ईश हैं कपीश के चरण नख,

करत प्रणाम कोटि हिये में गहत हैं।।22।।

परम प्रचण्ड बाहुबल को प्रकाशित कै,

देत अभयदान राम भक्तन को धन है।

सुनत टंकार जाकी कंपित हो यातुधान,

सुभट समर छाँड़ि करत गमन हैं।

पबि ते प्रतापि जाकि प्रभुता बखानैं सुर,

जाको गृह लाइ पूज्यो जानकी रमण है।

हाथ कपिनाथ के विराजै देव वंदित जे,

बावरा करत नाथ गदा को नमन है।।23।।

शीतल सुखद छाँव ताव हरि लेंत जाकि,
सुमिरे सकृत करै संकट शमन है।
देव दु:खहारी सुखकारी सदा सन्तन को,
राम हित हेतु दुष्ट दानव दमन है।
शीश को परसि जन अभय प्रदान करै,
प्रणत सहारो दास दोष को दमन है।
वरद विशाल आंजनेय कर कंजन को,
बावरा करत कोटि कोटिन नमन है।।24।।

विनय पच्चीसी दास हिये की व्यथा की कथा,

बांचि लेऊ आप बाप भावै सोइ कीजिये।

स्वामी सर्वज्ञ जानि कहि के सुनायो तऊ,

निपट ढिठाइ कियो क्षमा करि दीजिये।

करुणा की कोर से निहारि एक बार नाथ,

कृपा बरसाइ आधि व्याधि हरि लीजिये।

बावरे के नाथ कपिनाथ करुणानिधान,

देहु वरदान राम नाम रस पीजिये।।25।।

दोहा

विनय पच्चीसी दास की, विनय सुनत कपिनाथ।
निज जन के संकट हरत। पल में करत सनाथ।।
विनय करै धरि ध्यान नित। हिय भाव भरि पूरि।
संकट मोचन करत हैं। जन के संकट दूरि।।
पाठ करै नित हृदय महुँ। धरि कपीश को ध्यान।
कहत बावरा सपथ करि। कृपा करैं हनुमान।।

इति श्रीसद्गुरु कृपा प्रसादेन विश्वात्मा बावरा विरचित

"विनय पच्चीसी" सम्पूर्ण।

आरती श्री हनुमान जी की

जय कृपा सिंधु जन बन्धु अंजनि लाला।

प्रभु मो पर होउ कृपाला।।

जय भक्त जनन के पालक घालक खल के,

जय रामदूत जय पवनपूत निधि बल के।।

जय महावीर रणधीर देव प्रतिपाला। प्रभु......

जय दीनन के दुःख हर्ता भर्ता जन के,

जय असुर निकंदन जगवंदन सन्तन के।

हो तुम्हीं सहायक एक वीर बर बाला।। प्रभु....

राम राम

जय प्रेम भक्ति वैराग्य ज्ञान के दाता,
जय रामनाम के रसिक साधु जन त्राता।
हे नाथ कृपा की कोर करउ सब काला।। प्रभु...

हे नाथ काम मद क्रोध बोध अपनायो,
सुनि सुयश तिहारी शरण बावरा आयो।
अब लेउ मोहि अपनाय तोरि जगजाला।। प्रभु...

–विश्वात्मा बावरा

राम राम

ब्रह्मर्षि विश्वात्मा बावरा जी महाराज